80

प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाना

मत्ती 25:14-30, एक निकट दृष्टि

मसीह जो सिखाता था, उसमें से अधिकतर बातें पहली बार सुनने वालों के लिए चौंका देने वाली ही नहीं, वरन स्तब्ध करने वाली होती थीं। तोड़ों के दृष्टांत से ऐसा ही हुआ होगा।

यीशु ने अपने चेलों को यह सिखाने के लिए कि वे उसकी वापसी की प्रतीक्षा करते हुए *व्यस्त* रहें, उन्हें एक दृष्टांत दिया।[1] यह आत्मा की अगुआई से लिखा गया था, क्योंकि प्रेरितों के साथ-साथ प्रभु के सभी अनुयायियों को इसे याद दिलाना आवश्यक था। मत्ती ने सुसमाचार का अपना वृत्तांत कलीसिया के बनने के तीस या अधिक वर्षों के बाद लिखा। रोमांचकारी बातें अभी हो रही थीं,[2] परन्तु दूसरी पीढ़ी के मसीही बनाने का काफ़ी समय आ चुका था। शायद कुछ मण्डलियों में अब पहले जैसा जोश नहीं रहा था और वे हफ्ते बाद अपना अस्तित्व दिखाने से ही सन्तुष्ट होने लगी थीं (देखें प्रकाशितवाक्य 3:15)। तोड़ों का दृष्टांत पहली शताब्दी के मसीही लोगों को जगाने के लिए अलार्म जैसा था। ऐसे संदेश की इक्कीसवीं शताब्दी के लोगों को आवश्यकता है।

मैं चाहूंगा कि हम इस प्रसिद्ध कहानी को फिर से ताज़ा करें, ताकि इसे पहली शताब्दी की ऐनकों से देखते हुए इसमें उस चुनौती को देखें, जिसे शायद हमने पहले नहीं देखा था। दांव पर लगाना या जोखिम उठाया आपको कैसा लगता है? हो सकता है कि आप अपने शरीरों को जोखिम में डालने वालों[3] और आर्थिक जोखिम लेने वालों की प्रशंसा करें या फिर मेरी तरह सिर हिलाते हुए हैरान हों कि लोग ऐसे जोखिम भरे काम क्यों करते हैं। इस प्रकार के जोखिम लेने को हम समझ सकते हैं, पर हम में से अधिकतर लोग अपने प्रतिदिन के जीवनों से जोखिमों को निकालने को प्राथमिकता देते हैं। हमें जहां तक हो सके, जोखिम रहित रहना अच्छा लगता है। यदि आप पर यह बात लागू होती है, तो प्रभु के लिए जोखिम लेने का विचार बेकार है। तौ भी इस दृष्टांत में सिखाया गया है कि हमें अपने प्रभु को प्रसन्न करने के लिए वही करना चाहिए।

मैंने इस अध्ययन को चार भागों में बांटा है। हम दृष्टांत में दिए गए तोड़े वाले व्यक्ति पर ध्यान देंगे, जो जोखिम उठाने को तैयार नहीं था।

ज़िम्मेदारी और जोखिम (आयतें 14, 15)

दृष्टांत के आरम्भ में एक स्वामी अपने सेवकों को ज़िम्मेदारियां सौंपता है, जिनमें बड़ा जोखिम था। यीशु ने कहा कि स्वर्ग का राज्य[4] ''उस मनुष्य की तरह है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाया, ...'' (आयत 14क)।[5] ये उसके ''*अपने* दास'' थे यानी वे उसके गुलाम थे, जो उसकी सम्पत्ति थे।

इस दृष्टांत को अच्छी तरह समझने के लिए, हमें अपने आप को *परमेश्वर के* दासों या गुलामों के रूप में देखना चाहिए, जो उसके हैं। पौलुस ने लिखा है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो'' (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।[6] ''बपतिस्मे की तरल कब्र से बाहर आने वाला व्यक्ति एक संगति में प्रवेश करता है, जिसकी दहलीज़ पर स्पष्ट अर्थों में लिखा है, 'तुम अपने नहीं हो। *तुम्हें दाम देकर मोल लिया गया है।*' ''[7]

ज़िम्मेदारी

विदेश जाने की तैयारी कर रहे आदमी ने अपने दासों को बुलाकर ''अपनी सम्पत्ति उन को सौंप दी'' (मत्ती 25:14ख)।[8] ऐसा असामान्य नहीं था। रोमी साम्राज्य में अधिकांश काम दासों द्वारा ही किया जाता था। दासों को आम तौर पर ज़िम्मेदारी वाले पद दिए जाते थे।

''उस ने एक [दास, आदमी] को पांच तोड़े,[9] दूसरे को दो, और तीसरे को एक'' दिया (आयत 15क)। ''तोड़े'' शब्द को आज हम ''गुण'' के समानार्थक के रूप में इस्तेमाल करते हैं,[10] पर उस समय यह धन की एक इकाई था। धन का एक सिक्का नहीं बल्कि बहुमूल्य धातु की एक निश्चित राशि, जिसे ढाले हुए सिक्कों या जारों में डालकर तोला जाता था।[11] तीन दासों को दिए गए तोड़ों की सही-सही कीमत के बारे में हम नहीं बता सकते। ''अलग-अलग कालों में यूनानी-रोमी तोड़े का भार 26.4 किलोग्राम (58 पौंड) से 37.8 किलोग्राम (83 पौंड) तक हो सकता है।''[12] इसके अलावा इसकी कीमत इस पर भी निर्भर करती है कि यह सोने का था या चांदी का।[13] मत्ती 25 अध्याय में दिए गए तोड़े की सबसे सामान्य कीमत छह हज़ार दीनार आंकी जाती है।[14] यह मानते हुए कि यह मूल्यांकन सही है और यह ध्यान में रखते हुए कि दीनार साधारण मज़दूर को दी जाने वाली एक दिन की मज़दूरी था (मत्ती 20:2), तोड़े की कीमत बीस वर्षों में कमाए जाने वाले एक साधारण मज़दूर की मज़दूरी होगी।

इसलिए पहले दास को दिया जाने वाला तोड़ा एक साधारण मज़दूर की *एक सौ* वर्षों की कमाई था! दूसरे को दिया जाने वाला तोड़ा ऐसे ही व्यक्ति द्वारा *चालीस* वर्षों की कमाई था! तीसरे को बीस वर्षों में कमाए जाने वाले धन के बराबर मिला था! इन तोड़ों की कीमत पर विशेष ज़ोर देने का प्रयास किए बिना इतना ही कहना काफ़ी है कि उन्हें इतना धन दिया गया था, जिसे हम में से कइयों ने एक बार में कभी नहीं देखा है।[15]

स्वामी ने ''हर एक को उसकी सामर्थ के अनुसार दिया'' (मत्ती 25:15ख)।[16] किसी

को भी उसकी सामर्थ से अधिक नहीं दिया गया, और न ही किसी को कम दिया गया। ''सबको एक समान देना अन्यायपूर्ण हो सकता था। एक तोड़े की क्षमता वाले व्यक्ति के लिए पांच तोड़े का बोझ सहना मुश्किल होना था और पांच तोड़े वाले आदमी को केवल एक तोड़ा देने की चुनौती नहीं दी जानी थी।''[17]

यह ध्यान दें कि सब को *कुछ न कुछ* ज़रूर मिला। वास्तव में, सब को बहुत कुछ मिला।[18] नील लाइटफुट ने लिखा है कि ''स्वामी के कक्ष में से कोई खाली हाथ नहीं गया।''[19] मैंने यह इसलिए कहा है, क्योंकि मुझे पता चला है कि कुछ लोग अपने आप को ''बिना तोड़े'' वाले लोग कहते हैं। यदि आप समझ सकते हैं कि मैं क्या कह रहा हूं,[20] तो आप ''बिना तोड़े वाला'' व्यक्ति *नहीं* हैं। यदि आप जीवन में काम कर सकते हैं, एक से दूसरी जगह जा सकते हैं, शायद नौकरी पर लगे हैं, तो आप ''बिना तोड़े वाला'' व्यक्ति *नहीं* हैं। आपके पास गुण, समय, अवसर और शायद कुछ सम्पत्तियां भी हैं। आपको परमेश्वर की ओर से आशीष, बल्कि भरपूरी से आशीष दी गई है।[21]

परमेश्वर की आशिषों को पाने वाला होने के कारण आपको पता होना चाहिए कि उन आशिषों या दानों में चुनौती भी है। परमेश्वर हम से कहता है, ''ये सब वस्तुएं मेरी हैं, तुम्हें इनका इस्तेमाल *मेरी* सेवा के लिए करना है। मैं थोड़े समय के लिए उन्हें तेरे हाथ में दे रहा हूं। इस दौरान तुझे इनका इस्तेमाल *मेरे* उद्देश्य को पूरा करने के लिए करना है।'' स्वामी जब कोई दान देता है तो उसके साथ ज़िम्मेदारी भी जुड़ी होती है।

जोखिम

परन्तु दृष्टांत वाले स्वामी ने अपने दासों को अपनी सम्पत्तियां दीं, तो वे सम्पत्तियां केवल सम्पत्तियां ही नहीं, बल्कि बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियां थीं; उन में गंभीर *जोखिम* था। रब्बियों के लेखों के अनुसार, यदि कोई स्वामी किसी दास को कुछ सामान देकर परदेश चला जाता था, तो दास को अन्ततः उन वस्तुओं के इस्तेमाल का हिसाब देना होता था। स्वामी के लौटने पर यदि दास के पास कम हों तो दास को ही वह कमी पूरी करनी होती थी। ऐसा न कर पाने पर उसे जेल में डाल दिया जाता था। यह पता चलने पर कि दास ने अपने भण्डारीपन का दुरुपयोग किया है, उसे मार डाला जाता था।

जो कुछ परमेश्वर ने आपको दिया है, वह चाहे आपके गुण, आपका समय, आपकी सम्पत्तियां या आपके अवसर हैं, उन सब में जोखिम हैं। गलती करने का जोखिम है, आलोचना होने का जोखिम है और असफल होने का जोखिम है।

प्रत्युत्तर और विद्रोह (आयतें 15-19)

प्रत्युत्तर

स्वामी ''परदेश चला गया'' (आयत 15ग), ''तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन-देन किया, और पांच तोड़े और कमाए''[22] (आयत 16)। उसने

बिल्कुल समय नहीं गंवाया; अपने स्वामी के जाते ही उसने उन तोड़ों का इस्तेमाल किया। मुझे नहीं मालूम कि उसने उनका इस्तेमाल कैसे किया होगा। हो सकता है कि उसने कोई व्यवसाय शुरू किया हो। यह भी हो सकता है कि उसने कोई चीज़ खरीदकर उसे बेच दिया हो। पर उसने कारोबार किया, जिससे उसे पांच और तोड़े मिल गए। इस प्रकार पांच तोड़े वाले आदमी ने अपनी ज़िम्मेदारी निभाई। ''इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए'' (आयत 17)।

विद्रोह

अब हम एक तोड़े वाले आदमी पर आते हैं: ''परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी और अपने स्वामी के रुपये उसमें छिपा दिए'' (आयत 18)। अपने स्वामी के जाते ही यह आदमी बाहर बगीचे में गया और एक गहरा गड्ढा खोदकर उसमें धन रखकर गड्ढे को मिट्टी से भर दिया। यह कोई नया तरीका नहीं था।[23] आज जिस प्रकार बैंक मिल जाते हैं, वैसा उस समय नहीं होता था, इसलिए अधिकतर लोग अपना धन सुरक्षित रखने के लिए उसे भूमि में गाड़ देते थे।[24]

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि कुछ लोगों की नज़र में यह एक तोड़े वाला आदमी बुद्धिमान और सावधान था। रब्बी लोग भी दृष्टांत देते थे और उनका एक दृष्टांत इस प्रकार था:

> एक धनवान व्यक्ति लम्बी यात्रा पर जाने को था। उसने अपने दो सेवकों को बुलाकर कहा, ''मैं अपनी सम्पत्ति तुम लोगों के पास छोड़कर जा रहा हूं।'' उसने उसे दो सेवकों के बीच में बांट दिया और चला गया। जब वह गया हुआ था, तो एक सेवक ने जो कुछ उसे मिला था, उसे निवेश कर दिया और सब खो दिया। पर दूसरे ने जो कुछ उसे मिला था उसे स्वामी के लौटने तक छिपाकर रख दिया। इस प्रकार स्वामी के लौटने पर उसने जो कुछ उसे दिया गया था वैसे ही लौटा दिया। स्वामी ने उसे शाबाश दी और उसे अपने घर का प्रबन्धक बना दिया। अपने स्वामी का धन निवेश में बर्बाद कर देने वाले को मृत्यु दण्ड दिया गया।[25]

मैंने पहले कहा था कि यीशु के कुछ सुनने वालों को उसकी शिक्षा चौंकाने वाली ही नहीं, बल्कि स्तब्ध करने वाली लगी होगी। उसका दृष्टांत रब्बियों के दृष्टांत से बिल्कुल उलट था। प्रभु ने धन छिपाने वाले सेवक का ''नायक'' वाला टैग उतारकर उस पर ''खलनायक'' वाली पर्ची लगा दी।[26]

स्वामी ''बहुत दिनों'' के लिए बाहर गया था (आयत 19)। आपको क्या लगता है कि एक तोड़े वाले आदमी ने इस दौरान क्या किया होगा? निश्चय ही वह उस धन से जो उसे दिया गया था, व्यापार नहीं कर रहा था; उसने तो भूमि में गड्ढा खोदकर उसे दबा दिया था। मुझे नहीं मालूम कि उसने वह समय कैसे व्यतीत किया, पर इतना जानता हूं कि वह अपने स्वामी की सेवा *नहीं* कर रहा था।

इस एक तोड़े वाले व्यक्ति ने जो गलती की थी, उसके बारे में स्पष्ट कर दें कि उसने उस अधर्मी भण्डारी की तरह धन इधर-उधर नहीं बांटा था (लूका 16:1)। उसने उड़ाऊ पुत्र की तरह आवारागर्दी में धन बर्बाद नहीं किया था (लूका 15:13)। उसने अधर्मी भण्डारी की तरह दस हज़ार तोड़े कर्ज़ नहीं लिया था (मत्ती 18:24)। उसकी गलती यह थी कि उसने जो कुछ उसके पास था, *उसका इस्तेमाल नहीं किया* था।[27] जब मैं एक जवान प्रचारक था, तो मैं इस दृष्टांत पर एक संदेश देता था, जिसे मैं ''तीन आसान पाठों में अपना प्राण कैसे खोएं'' नाम देता था। मेरा निष्कर्ष यह होता था: अपने प्राण को खोने का सबसे आसान ढंग *कुछ न करना* है। इसके लिए किसी विशेष कौशल या प्रयास की आवश्यकता नहीं है। कोई भी इसे कर सकता है, बल्कि बहुत से लोग करते हैं।

प्रतिफल और ''कारण'' (आयतें 19-25)

प्रतिफल

''बहुत दिनों के बाद'' स्वामी अपने दासों के साथ हिसाब करने के लिए आया (आयत 19)। आप और मैं परमेश्वर के भण्डारी हैं और एक दिन हमारा स्वामी वापस आएगा (प्रेरितों 1:11; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रेरितों 17:31)। फिर हमें भी अपने भण्डारीपन का हिसाब देना होगा (रोमियों 14:12; 2 कुरिन्थियों 5:10; देखें 1 कुरिन्थियों 4:2)।

पहले पांच तोड़ों वाले आदमी का हिसाब हुआ था। वह शायद अपने काम के बारे में बताने के लिए उतावला था। मैं उसके चेहरे पर यह कहते हुए मुस्कान देख सकता हूं कि ''हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने पांच तोड़े और कमाए हैं'' (मत्ती 25:20)। उत्तर देते हुए स्वामी भी मुस्कुराया होगा, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (आयत 21क)।

ध्यान दें कि स्वामी ने दास को कैसे सम्बोधित किया। उसने उससे यह नहीं कहा, ''शाबाश, चतुर और सफल दास,'' बल्कि उसने ''अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' कहकर उसकी तारीफ़ की। हम सब चतुर नहीं हो सकते और न ही हम में से अधिकतर लोग सफल हो सकते हैं (संसार के दृष्टिकोण से); पर ''धन्य'' और ''विश्वासयोग्य'' हम सभी हो सकते हैं। हम उसे जो प्रभु हमें देता है, लेकर उसका अच्छे से अच्छे ढंग से इस्तेमाल कर सकते हैं। यही तो वह चाहता है।[28]

याद रखें कि यह एक *स्वामी* का अपने *दास* से बात करना था। दास उसकी सम्पत्ति थी; उसने दास का कुछ देना नहीं था, उसे ''धन्यवाद'' कहने की भी आवश्यकता नहीं थी। यीशु ने कहा था कि अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करके दास को कहना चाहिए, ''मैं निकम्मा हूं; मुझे जो करना चाहिए था, मैंने केवल वही किया है'' (देखें लूका 17:10)। इस दृष्टांत में स्वामी के उदार प्रत्युत्तर से हमें उस व्यक्ति के स्वभाव का पता चलता है। वह निष्पक्ष और दूसरों की बात सुनने वाला व्यक्ति था; स्पष्टतया वह शाबाशी देने और प्रतिफल देने के अवसर ढूंढ़ता था।

पांच तोड़ों वाले आदमी से पहले तो उसने कहा, ''तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा;[29] मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा[30]'' (मत्ती 25:21ख)। फिर उसने पांच तोड़े वाले आदमी से कहा, ''अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो'' (आयत 21ग)। इसे स्वामी के लौटने के जश्न में शामिल होने की अनुमति देना कहा जा सकता है। यह स्वामी की मेज़ पर खाने की दावत का निमन्त्रण हो सकता है।[31] ऐसा सम्मान स्वतन्त्र किया जाना भी हो सकता है।[32]

इसके बाद दो तोड़ों वाले आदमी की बारी थी। वह भी हिसाब देने को तत्पर था: ''हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख मैं ने दो तोड़े और कमाए हैं'' (आयत 22)। हमें उसका प्रतिफल उससे तीन अधिक तोड़े वाले आदमी को मिले प्रतिफल से अधिक लग सकता है, पर उसे भी वही शाबाशी और वही प्रतिफल मिला। बाइबल एक जैसी कई आयतें दोहराती नहीं है,[33] पर 21 और 23 आयतें लगभग एक जैसी ही हैं। पांच तोड़े वाले आदमी की तरह दो तोड़े वाले आदमी ने भी अपनी पूरी कोशिश की थी और स्वामी यही चाहता था। उसे भी यही कहा गया, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो'' (आयत 23)।

प्रभु के लिए जोखिम उठाने को तैयार चाहे कोई भी हो, वह विजयी ही है। क्या कुछ ऐसा है, जो आपको विश्वास हो कि परमेश्वर आपसे करवाना चाहता है? क्या आप वह करने से डर रहे हैं? क्या आप असफलता से डरते हैं? इसे कर डालें। ''सफल'' होना या ''असफल'' होना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्व इस बात का है कि आपने तन-मन से कोशिश की। फिर परमेश्वर आपसे भी कहेगा, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास।''

''कारण''

एक तोड़े वाले आदमी ने अंत में अपनी रिपोर्ट दी। वह पीछे छिपा रहा होगा, इस बात से भयभीत कि उसकी बारी न आ जाए। फिर भी अन्त में, ''जिसको एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहां कहीं नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है'' (आयत 24)। स्वामी के स्वभाव पर दोष लगाना उस समय के बोने और काटने के ढंगों पर आधारित था। उस समय खेतों में बाड़ें नहीं होती थीं; खेत एक-दूसरे से जुड़े होते थे। बीज हाथों से बोया (बिखेरा) जाता था। दास के मन में था कि स्वामी ''गुस्से वाला''[34] है, जिसने तर्क दिया कि ''मेरे कुछ बीज पड़ोसी के खेत में गिर गए होंगे, सो मैं अपने बीज का फल लेने के लिए उसके खेत में से कई फुट तक फसल काट लूंगा।''

दास ने अपने स्वामी पर लोभी, कंजूस, ज़िद्दी और बेईमान होने तक का आरोप लगाया। क्या यह सही मूल्यांकन था? एक तोड़े वाले आदमी के शब्दों में स्वामी के पहले देखे स्वभाव में अन्तर करें: जो विश्वासयोग्य को शाबाशी और प्रतिफल देने के लिए तैयार ही नहीं, बल्कि इच्छुक था। प्रभु के लिए जोखिम उठाने को तैयार न होने का खतरा हमें

परमेश्वर के स्वभाव पर संदेह करने के लिए प्रेरित कर सकता है। हम उसे एक प्रेमी, दयालु पिता के बजाय एक ज़िद्दी नियम बनाने वाले और काम की मांग करने वाले लोभी तानाशाह के रूप में सोच सकते हैं।

एक तोड़े वाले आदमी ने यह भी कहा, ''सो मैं डर गया'' (आयत 25क)। हमें उन लोगों के साथ जो डरने वाले हैं, सहानुभूति है। हम सब किसी न किसी से डरते हैं।[35] परन्तु हमें अपने आप से हमेशा पूछना चाहिए कि ''क्या मैं इसलिए डरता हूं कि मुझे स्वामी पर भरोसा नहीं है?'' परमेश्वर ने प्रकाशितवाक्य 21:8 में खोए हुओं की सूची का आरम्भ ''डरपोकों'' से ही किया।

उस दास ने कहा, ''मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया'' (आयत 25क, ख)। वह शायद असफलता से डरा था। वह इसलिए डरा होगा कि वह दो और पांच तोड़े पाने वालों की तरह काम नहीं कर सका।[36] उसने स्पष्ट कहा कि उसे डर था कि वह अपने स्वामी को प्रसन्न नहीं कर सकता था। यानी वह कह रहा था कि ''मैं जीतने की अवस्था में नहीं था ... सो मैंने कुछ भी नहीं किया।''

उस व्यक्ति ने अपने अलावा सब पर दोष लगाया। दूसरों पर आरोप लगाना हमें बचपन में ही आ जाता है (मुझे एक-दूसरे पर आरोप लगाते हुए दो लड़कों की बात याद आती है, जो कहते थे, ''*उसी ने* किया है।'') कुछ लोग अपनी कमियों के लिए अपने माता-पिता पर आरोप लगाते हैं। कुछ लोग समाज को दोषी ठहराते हैं। कुछ परमेश्वर पर भी दोष लगाते हैं। यदि आप अपनी गलतियों के लिए किसी में दोष निकालना चाहते हैं तो सबसे अच्छी जगह दर्पण के सामने खड़े होकर देखना है।

फिर उस एक तोड़े वाले आदमी ने जो उसे दिया गया था अर्थात एक बहुमूल्य धातु को जो अब गन्दी, बदरंग और बदबूदार हो चुकी थी, लिया। उसने कहा, ''देख, जो तेरा है, वह यह है'' (आयत 25ग), जैसे उसके स्वामी को इससे अधिक उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

प्रतिक्रिया और परिणाम (आयतें 26-30)

प्रतिक्रिया

हम कहानी के दुखद निष्कर्ष पर आ पहुंचे हैं। स्वामी ने उस आदमी से कहा, ''हे दुष्ट और आलसी[37] दास'' (आयत 26क)। दो दासों को उसने ''धन्य और विश्वासयोग्य'' कहा था। इसे उसने ''दुष्ट'' और ''आलसी'' नाम दिया।

उसने आगे कहा, ''यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं और जहां मैंने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं'' (आयत 26ख)।[38] वह अपने स्वभाव के लिए उस व्यक्ति की चापलूसी से सहमति नहीं जता रहा था, बल्कि कह रहा था, ''तेरी अपनी ही बातें तुझे दोषी ठहराती हैं। क्योंकि मेरे बारे में तेरा ऐसा विचार है, तो इसी से तुझे *कुछ करने* की प्रेरणा मिलनी चाहिए थी।''

स्वामी ने कहा, ''तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर

अपना धन ब्याज समेत ले लेता'' (आयत 27)। अन्य शब्दों में, ''कम से कम तू धन निवेश में ही लगा देता।''[39] उस समय आज की तरह बैंक नहीं होते थे। ''सर्राफ'' आज के ''बैंक'' की तरह ही होते थे और उनका अनुवाद ''पीढ़े वाले'' हो सकता है[40] यद्यपि हम ने पहले देखा था कि उस समय आज की तरह बैंक नहीं होते थे, पर अधिकतर मण्डियों में ''आढ़ती'' होते थे, जिनके पीढ़ों पर सिक्के पड़े रहते थे। कुछ कीमत लेकर वे पैसे दे देते या कर्ज़ देते थे। वे ब्याज पर कोई चीज़ भी रख लेते थे।[41] ऐसे व्यक्ति को जिसका कोई ठिकाना न हो, किसी की अमानत सौंपना जोखिम भरा काम हो सकता था; पर स्वामी के कहने का अर्थ था कि ''कुछ न करने से तो *वह भी* अच्छा होता।''

परिणाम

स्वामी पास खड़े सेवकों की ओर मुंह करके कहने लगा, ''इसलिए वह तोड़ा उससे ले लो, और जिसके पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो'' (आयत 28)। यीशु ने यह टिप्पणी जोड़ी, ''क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा'' (आयत 29)।

कोई कह सकता है, ''एक मिनट! यह तो सही नहीं है! कुछ परिस्थितियों में तो किसी से जिसके पास बहुत है, लेकर जिसके पास कम है, उसे देने के लिए लेना उचित है। पर इस बेचारे के पास तो केवल एक ही तोड़ा था। उस एक तोड़े को उसे क्यों दे दिया गया, जिसके पास पहले से ही दस तोड़े थे? यह बिल्कुल न्यायसंगत नहीं है!'' आपको यह न्यायसंगत लगे या न, यह संसार का ही नियम है, जिसे यीशु ने इस दृष्टांत में जोड़ा। इसे ''क्षीणता का नियम'' कहा गया है। सरल शब्दों में कहें तो, ''इसका इस्तेमाल करो, वरना यह तुम्हारे पास नहीं रहेगा।'' यदि आप अपनी मांसपेशियों का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो वे क्षीण या निर्बल हो जाएंगी। यदि आप अपनी स्वाभाविक क्षमताओं का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो आप उन्हें खो देंगे। यदि आप अपने कौशल का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो आप उसे भूल जाएंगे। यह सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है। मित्रता को नज़रअन्दाज कर दें तो उसे हानि होगी। विवाह में एक-दूसरे को नज़रअन्दाज करें तो वैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ जाएगा।

अपने आत्मिक दानों को नज़रअन्दाज करने का अन्तिम परिणाम क्या है? आयत 30 में दिए गए शब्दों से पीड़ादायक शब्द और कहीं नहीं हैं: ''इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।'' एक तोड़े वाले आदमी को ''दुष्ट'' और ''आलसी'' कहा गया था; अब उसे ''निकम्मा'' भी कहा गया। हम में से अधिकतर लोगों को ''निकम्मा'' के बजाय ''दुष्ट'' या ''आलसी'' कहलाना अधिक पसन्द होगा। तौ भी यदि कोई अपने गुणों और अवसरों का इस्तेमाल अपने प्रभु के लिए करने से दूर रहता है तो वह ऐसा ही बन जाता है।

सारांश

एक क्षण के लिए, कल्पना करें कि कोई व्यक्ति एक मोटी, काली रेखा आपके सामने

खींचकर कहता है, ''यह तुम्हारी आत्मिक जोखिम रेखा है। मैं तुम्हें इसके आगे आने की चुनौती देता हूं-अभी!''[42] विचार करें कि प्रभु के लिए आपको अभी कौन से जोखिम उठाने आवश्यक हैं। कुछ लोगों के लिए वह काली रेखा मसीही बनना है।[43] यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि उसके पीछे चलने में जोखिम है (लूका 9:57-62)। ऐसा करके आप अपने मित्रों या परिवार को खो सकते हैं (मत्ती 10:36)। कुछ स्थानों पर जीवन से हाथ धोना पड़ सकता है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। दूसरों के लिए वह काली रेखा पहली बार सार्वजनिक प्रार्थना में अगुआई करना, किसी बाइबल क्लास में सिखाना, अगुआई करना, संदेश देने के लिए अपने तोड़ों और योग्यताओं का इस्तेमाल करने का जोखिम हो सकता है। यह अपने प्रभु के लिए पूर्णकालिक सेवा में समर्पित होने के लिए ''सब कुछ छोड़ने'' का जोखिम भी हो सकता है। कुछ औरों के लिए वह काली रेखा अपने मित्रों, पड़ोसियों और परिवार के लोगों को सुसमाचार सुनाना हो सकता है। जब आप सुसमाचार दूसरों को बताने का प्रयास करते हैं, तो आप अपनी मित्रता और सम्बन्धों को दांव पर लगाते हैं या जोखिम में डालते हैं। वह काली रेखा कई प्रकार के जोखिम हो सकती है। अपने लिए जोखिमों पर विचार करते हुए, याद रखें कि परमेश्वर आपसे वह जोखिम उठाने की *अपेक्षा* करता है। वह उम्मीद करता है कि आप जो कुछ बन सकते हैं, वह बनें।

दोबारा आने पर क्या प्रभु, ''धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो'' (मत्ती 25:21) ? कहेगा या यह कि ''हे दुष्ट और आलसी दास; ...''; ''इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा'' (आयतें 26, 30) ? वह *उस समय* क्या कहेगा, यह इस पर निर्भर करता है कि आप *अब* क्या करते हैं।

नोट्स

इस प्रस्तुति में मैंने ''अपने प्राण को खोने के तीन आसान पाठ'' नामक प्रवचन से तोड़ों के दृष्टांत की बात की है। वे ''तीन आसान पाठ'' हैं: (1) अपने तोड़ों को दबा दो, (2) उन्हें इस्तेमाल करने से *डरो* और (3) कुछ न करो। मेरा एक और प्रवचन है, जिसमें आरम्भ के लिए इसी दृष्टांत का इस्तेमाल किया गया है, यह प्रवचन ''मैं डरता था'' शीर्षक से पर्सनल इवैंजलिज़्म यानी व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार सिखाने पर है।

टिप्पणियां

[1]आप चाहें तो मत्ती 25 के मुख्य भागों की समीक्षा करके पाठ में बताए गए तैयार रहने के विचार में तोड़ों के दृष्टांत का योगदान बता सकते हैं। [2]पौलुस जेल से छूटने के बाद अपनी अंतिम यात्राएं कर रहा हो सकता है, और दूसरे मसीही सुसमाचार को फैला रहे थे। [3]शारीरिक जोखिमों के उदारहण दें, जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। हमारे यहां, बंगी-जंपिंग, हैंग ग्लाइडिंग और पैराशूटिंग आदि शामिल हैं। [4]KJV में मत्ती 25:14 में ''स्वर्ग का राज्य'' को इटैलिक (तिरछा) किया गया है, जो इस बात का संकेत है कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। मत्ती 25:1 दस कुंवारियों के दृष्टांत के ही नहीं, बल्कि तोड़ों के दृष्टांत के परिचय

के रूप में भी लगता है। मत्ती 25:1 का आरम्भ होता है, ''स्वर्ग का राज्य ...के समान होगा। ...''[5]''दास'' *(doulos)* के लिए यूनानी शब्द का बहुवचन रूप इस्तेमाल किया गया है।[6]हमें उस लहू के द्वारा (1 पतरस 1:18,19) उसके लहू से खरीदा गया (प्रेरितों 20:28), छुड़ाया गया (''वापस लाया गया'') है।[7]एवन मेलोन, ''द करेक्टरिस्टिक्स ऑफ ए गुड स्टुअर्ड,'' *द प्रीचर' स पिरियोडीकल* (जुलाई 1983) :11-13. [8]विद्वान इस पर चर्चा करते हैं कि उसने तीनों दासों को अपनी *सारी* सम्पत्ति दी या नहीं। आयत 14 की भाषा की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। दूसरी ओर, यदि उसने दी, तो वे ''बहुत वस्तुएं'' कौन सी हैं, जिन पर दोनों को अधिकारी बनाया जाना था (आयतें 21, 23)? अच्छा है कि इस विवरण का दृष्टांत के संदेश से कोई सम्बन्ध नहीं है।[9] ''तोड़े'' के लिए मत्ती 25:15 में यूनानी शब्द *talanta* है, जिसका अंग्रेजी में लिप्यंतरण *''Talents''* किया गया है।[10]शब्दों के मूल का अध्ययन करने वाले कुछ लोगों का मानना है कि अंग्रेजी शब्द ''टेलेंट'' का अर्थ ''योग्यता'' तोड़ों के दृष्टांत में गुण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

[11]मत्ती 18 के अधर्मी भंडारी के दृष्टांत में भी तोड़े की धन की इकाई का इस्तेमाल किया गया है, जहां ''दस हजार तोड़े'' कहा गया है (आयत 24)। उस दृष्टांत में संख्या का इस्तेमाल कर्ज को दर्शाने के लिए किया गया है, जिसे *कोई नहीं* चुका सकता।[12]ई.एम.कुक, ''वेट्स एंड मइयर्स,'' *इंटरनेशल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशोधन, सामान्य संस्करण जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1988), 4:1055.[13]यह तांबे का तोड़ा भी हो सकता है। [14]डी.ए.कार्सन, ''मैथ्यू,'' *द एक्सपोजिटर' स बाइबल कमेंट्री,* अंक 8, सामान्य संस्करण, फ्रैंक ई.गेबलेन (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन : जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस,1984), 516; जैक पी.लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू, पार्ट 2* (ऑस्टिन, टैक्सस : स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 135. [15]इन तोड़ों की कीमत तय करने की कोशिश करते हुए कुछ प्रकाशन, धन की सदियों पुरानी नहीं तो दशकों पुरानी इकाइयों का इस्तेमाल करते हैं। संख्या कई बार उपहासपूर्ण ढंग से कम होती है।[16]सम्पत्ति का वितरण सही मापदण्ड मार्क्सवादी विचारधारा द्वारा बताया जाने वाला ''प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार'' नहीं, बल्कि ''प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार'' है (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमेंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू* [ऑस्टिन, टैक्सस : फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968],401)। [17]वही। [18]एक तोड़ा भी बहुत कीमती था। इसी प्रकार, आज ''एक तोड़े'' वाले व्यक्ति को भी यह एहसास होना आवश्यक है कि उसका एक ''तोड़ा'' महत्वपूर्ण है। हो सकता है कि केवल उसे अकेले को ही यह दान मिला हो। यदि वह उसका इस्तेमाल नहीं करता, तो कुछ आवश्यक काम या तो बिना किए रह जाएगा या इसे कोई ऐसा व्यक्ति करेगा जो इसे करने के योग्य नहीं। [19]नील आर. लाइटफुट, *द पैरेबल्स ऑफ जीज़स,* पार्ट 2 (ऑस्टिन, टैक्सस : आर.बी.स्वीट कं.,1965), 78. [20]एक प्रवचन में, मैं कहूंगा ''यदि आप मुझे सुन सकते हैं।''

[21]इफीसियों 4:8 और रोमियों 12:6-8 परमेश्वर के कुछ आत्मिक दानों के बारे में बताते हैं।[22]बहुत से प्राचीन धर्मशास्त्रों में तुरन्त के अर्थ वाला यूनानी शब्द नहीं मिलता। [23]लुईस, 135. [24]आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जिसने पिछले दिनों अपना धन डिब्बे में, गद्दे के नीचे या कहीं और छिपाया हो? यदि हां, तो आप उदाहरण के रूप में उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। [25]पीटरमैन; राबर्ट एच. माउस, *न्यू इंटरनेशनल बिबलिकल कमेंट्री: मैथ्यू* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 234. [26]यदि आपके सुनने वाले ''बी'' से लिखी जाने वाली पुरानी पश्चिमी फिल्मों से परिचित हैं तो आप कह सकते हैं, ''मसीह ने उस व्यक्ति का सफ़ेद टोप उतार कर उसे काला टोप पहना दिया।'' [27]किसी दृष्टांत में हर सम्भावित स्थिति को नहीं दिखाया जा सकता। इस दृष्टांत में तो एक तोड़े वाले व्यक्ति ने अपने तोड़े अर्थात गुण का इस्तेमाल नहीं किया। वास्तविक जीवन में आम तौर पर पांच तोड़े वाला आदमी या दो तोड़े वाला आदमी अपने सभी गुणों का इस्तेमाल करने में असफल रहता है। यह उससे भी गुमराह करने वाला है: यदि पांच तोड़े वाला आदमी अपने चार तोड़ों का ही इस्तेमाल करे, तो वह विश्वासयोग्यता से प्रभु की सेवा के लिए *प्रकट* हो सकता है। [28]इस बात का कि किसी दृष्टांत में हर परिस्थिति को नहीं बताया जा सकता एक और उदाहरण यह है, इस दृष्टांत में, पांच तोड़े वाला और दो तोड़े वाला व्यक्ति दोनों सफल थे (संसार की दृष्टि से), परन्तु परमेश्वर द्वारा दिए गए दानों के इस्तेमाल की कोशिश करते हुए हमारे साथ ऐसा नहीं होता। प्रभु हमें ''सफल'' तभी मानता

है, यदि हम उसके दिए आदेश को विश्वासयोग्यता से मानें। [29]तोड़ों के दृष्टांत की तरह, ''थोड़े'' एक तुलनात्मक शब्द है: उसकी तुलना में जो उसे ''थोड़ा'' सौंपा जाना था। [30]''का अधिकारी'' थोड़ा और मजबूत हो सकता है। मूल शास्त्र में ''मैंने तुझे ऊपर ठहराया है'' है।

[31]किसी गैर दास को दिए जाने वाले इस सम्मान के उदाहरण के लिए देखें 2 शमूएल 9:10. नीतिवचन 17:2 भी देखें। [32]लाइटफुट, 80; रिचर्ड सी.ट्रेंच, *नोट्स ऑन द पैरेबल्स ऑफ अवर लार्ड,* (वेस्टवुड, न्यू जर्सी : फ्लेमिंग एच.रैवल कं.,1953),279. [33]एक जैसी आयतों का एक उदाहरण लूका 13:3 और 13:5 है। एक और उदाहरण नीतिवचन 14:12 और 16:25 है। [34]ओलफ एम.नोरली, *द न्यू टेस्टामेंट: ए न्यू ट्रासंलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961)। [35]आप उदारहण दे सकते हैं। [36]लोग कई बार तर्क देते हैं, ''यदि मैं इस [या उस] व्यक्ति जैसा नहीं कर सकता तो मैं कुछ नहीं करूंगा''। [37]बाइबल आलस्य और बेकार होने की निंदा करती है(देखें नीतिवचन 6:6; 31:27; सभोपदेशक 10:18; 1 तीमिथुयस 5:13)। [38]अंग्रेजी के RSV अनुवाद में इस वाक्य के आगे प्रश्नचिह्न लगाकर यह अर्थ दिया गया है, ''तो तू मुझे *ऐसा* समझता है?'' [39]दृष्टांत के इस विवरण से विद्वानों को चिंता होती है क्योंकि पुराने नियम में अपने यहूदी साथी से ब्याज लेने की मनाही थी (निर्गमन 22:25; लैव्यव्यवस्था 25:35-37; व्यवस्थाविवरण 23:19, 20; देखें भजन संहिता 15:5)। परन्तु व्यवस्था में अन्यजातियों से ब्याज लेने की मनाही नहीं थी (व्यवस्थाविवरण 23:20)। हमें शायद इसे अनावश्यक विवरण मानना चाहिए। दृष्टांत में यीशु द्वारा इसका वर्णन करने का अर्थ यह नहीं उसने इसकी मान्यता दे दी (देखें लूका 16:8; 18:2)। [40]मत्ती 25:27 में प्रयुक्त यूनानी शब्द ''पीढ़ा'' या मेज़ (trapedza) *के लिए शब्द से लिया गया है।* इस शब्द का एक रूप मत्ती 21:12, मरकुस 11:15 और यूहन्ना 2:15 में आढ़तियों के पीढ़े के लिए इस्तेमाल किया गया है।

[41]आज के बैंकों की तरह, उसने अधिक ब्याज पर दूसरों को ऋण देकर लाभ कमाया। [42]काली रेखा खींचने का उदाहरण पीटरमैन से लिया गया है। [43]यदि आप इसे प्रवचन के रूप में इस्तेमाल करते हैं तो लोगों को बताएं कि मसीही कैसे बनना है (मरकुस 16:15,16; प्रेरितों 2:38)।